भूमिका।

प्रिय पाठकवृन्द !

संवत् १९६५ में मैंने कुछ बालकों को महिम्न स्तोत्र पठन कराना आरंभ किया तो मेरे चित्त में विचार आया कि यह महिम्न स्तोत्र संस्कृत में है यदि यही स्तोत्र भाषा पद्य में हो जावे तो बहुत से हमारे भाई इसका पठन किया करें और उसका सार भी समझ सकें.

कारण बिना अर्थ के समझे किसी स्तुति का फल भी पूर्ण नहीं होता.

शिव कृपा से यह विचार पूर्ण होगया.

अब आप लोगों से निवेदन करता हूं कि इस का पठन कर कर मेरे परिश्रम को सफल करें, और जो भूल चूक होवे सो कृपा करके सुधार लेवें और मुझे भी सूचना करदें, कि अगले संस्करण में सुधार कर दिया जावे।

निवेदक—

मूलचंद वैश्य अग्रवाल,
नसीराबाद (राजपुताना)

* ॐ *

समः श्लोकी भाषामहिम्नः लिख्यते ॥

श्लोकः ।

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥

अहो नाथा तेरी अपर महिमा को[1] कथ सकै ।
गिरा[2] ब्रह्मा की भी रुक रुक चलै है इह[3] बिषै ।

---

१ कौन, २ वाणी, ३ तुम्हारी स्तुति करने में ।

इसीसे ते[1] भक्ता निज[2] बुध समाना[3] सब कहैं।
स्तुती मेरी में भी नहीं बहु विवादा[4] अवसरै[5]॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो।
रतद्व्यावृ-त्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदेत्ववर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥२॥

मनः वाणी को भी तव[6] महिम का पार न मिलै।
पुराणा वेदा भी सब चकित होके कह रहे॥
सृती[7] में को है जो गुण त्रिषय तेरे सब कहै।
असीजो ज्योती है तदपिगुण मूर्ती बिलसती[8] २॥

---

१ तेरे, २ अपनी बुद्धि, ३ समान, ४ कुतर्क, ५ योग्य,
६ तेरी, ७ सृष्टि-जगत, ८ दरसती।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत
स्तवब्रह्मन् किं वा गपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवत
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

मधू[1] से भी मीठी सुध[2] सरिस बाणी रचयते[3]
करेगी क्या ब्रह्मन् प्रसन गुरु[4] की भी वच[5] तुम्हें
करूं वाणी शुद्धम् कुछ गुण तुम्हारे कथन[6] से
इसीसे धी[7] मेरी स्तुति करन का आशय[8] करैं ३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

---

१ शहद, २ अमृत, ३ बनाने वाला, ४ बृहस्पति
५ बाणी, ६ कहकर, ७ बुद्धि, ८ विचार ।

तवैच्छा है कर्तृ[1] उदय[2] क्षय[3] पालन्[4] जगत का
त्रिवेदा[5] सारम्भी[6] त्रिगुण[7] धर रूपं तव विभो
अहो दाता वकैं अशुध कह पापी सुधयशो
त्रिवादों[8] से चाहैं कुबुध[9] यश काढन्[10] जगत सों ४

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

कहो कैसे धाता[11] जग किस प्रकारा[12] कर दृढ़े[13]
रचै[14] किं[15] काया से किस विध[16] कहां बैठ करके

---

१ करने वाली, २ पैदा, ३ नाश, ४ निर्वाह, ५ तीन वेद ऋक- यजु स्याम, ६ वेदों के सार, ७ तीन गुण, ८ कुतर्कों, ९ खोटी बुद्धि वाले, १० निकालना, ११ जगत् का पैदा करने वाला, १२ तरह, १३ निश्चय करके १४ बनावें, १५ कौनसी, १६ तरह ।

न पाके औसाना[1] कुबुध[2] कुतर्कों[3] का विभव[4] में
बनें[5] मोही[6] वाची[7] अवश दुख भोगें जगत में ॥५॥

अजन्मानो लोका किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वांप्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

अजन्मा हैं क्या ये सब जगत अंगों सहित हों
बिना माने धाता किस विध बनेगा यह विभो
कहो सामग्री क्या बिन जनम[8] दाता भवरचन्
अहो देवा शंका करत मतहीना[9] तव विषय ६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।

---

१ मोका, २ नष्ट बुद्धि, ३ विवादों, ४ ऐश्वर्य, ५ होवें,
६ मोहवश, ७ वाचाल ८ जगत को पैदा करने की ९ कुबुद्धि

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

श्रुती[१] सांखी[२] योगी[३] शिव[४] मति तथा मानत हरि[५]
तुम्ही[६] स्थाना एका स्वरु मत हमारा सब कैंह
सभी सूधे टेढ़े चलत पथ[७] नाना[८] निज[९] रुचै[१०]
नरों को आधारा तुम जल जलों को समुद है ७॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तांतामृद्धिं विदधति भवद्भ्रुप्रणिहितां ॥
नहिं स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

---

१ वेदों के मानने वाले, २ सांख्य शास्त्र के मानने वाले, ३ योगशास्त्र के मानने वाले, ४ शैवी ५ विष्णु, ,, ७ मार्ग, ८ बहुत ९ अपनी १० मनभावन

भसम्[1] नान्दी सर्पा परशु मृगछाला खटपगा[2]
कपालों[3] की माला यह धन तुम्हारा वरदता[4]
सदा भोगैं देवा ऋध सिध प्रसादा तव कृपा
न घूमे तृष्णा में प्रसन्न[5] चित राखैं निज सदा।८
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्ते प्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन्जिह्रेमित्वां नखलुननुधृष्टा मुखरता ॥९॥
इसे चालू कोई अचल कह कोई जगत है
प्रकारा नानाही चल अचल कोई कहत है
नमैंहोऊं लज्जित् पुरमथन[6] तेरी स्तुति विषै
नमाने वाचा[7] मम् अवश[8] स्तुतितेरी विनकरै ९॥

---

१ नान्दिया, २ खाट का पाया, ३ आदमी के सिर, ४ वर का देने वाले, ५ सन्न, ६ शिवजी का नाम, ७ वाणी ८ निश्चय।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिंच्यो हरि रधः
परिच्छेतुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयंतस्थेताभ्यांतवकिमनुवृत्तिर्न फलति॥१०॥

विभो तेरा[1] नापन् उपर[2] जग धाता हरि तले
न पाया नापा[3] जिन् यदि अगन वायू तक[4] फिरे
भरे श्रद्धा[5] नाथा स्तुति करन तेरी लग गये
नक्या हो सेवासे जबतुम मिले आपमन से॥११॥

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्
शिरः पद्मश्रेणी रचितचरणाम्भोरुहबले
स्थारायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥१२

१ तेरे ऐश्वर्य का अंत लेने, २ आकाश ३ पालन, ४ अंत, ५ विश्वास ।

बिना बैरी रावन बिन यतन[1] पाया त्रिभुवने[2]
करी बाहू[3] धारन जब न रणकंडू[4] मिलसके
करी पूजा चर्णन् शिर रचित[5] माला बलिधरे[6]
प्रतापा[7] हे नाथा तब अचल सेवा करन के ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनम्
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौविक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेप्यलसचलितांगुष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठात्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितोमुह्यतिखलः १२

तुम्हारी सेवा से भुजसमूह[8] को ये बल मिला
उठाता कैलासा बलकर बसो हो तुम जहां
प्रतिष्ठा[9] ना पाई तव पग अंगूठा जब चला
हुवा मोही[10] रावन् जवहि खल[11] नाथा वढगया १२।

---

१ तजवीज २ जगत ३ लडने की मनस्या कम हुई। ४ लडने वाला ५ बनाई हुई ६ भेंट दई ७ फल ८ रावन के बीस हाथ ९ बडाई १० लाचार ११ दुष्ट.

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः १३।

बड़ी रिद्धी इंदर निज विभव सेती तुछ[1] करी
असाजो वणासुर निज बसाकिया है त्रिभुवना[2]
अचम्भा है क्या जो तव चरण सेवै वरदना[3]
नहीं क्या वो पावै शिर जब नवावे तुमहिको १३

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षयचकित देवा सुरकृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
सकल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः १४।

---

१ छोटी २ सारा जगत ३ वरके देने वाले ।

जवै देखैं नाशा सुर[1] असुर[2]होता असमै[3]ये
करी दाया उन्पे विष खल पिया है त्रिनयना
न देवे क्या शोभा वह चिन्ह[4] बनाजो विषहिसे
स्तुतियोग्यंलांछन जगअभै[6]यदाभांदतजिसे १४
असिद्धार्था नैव क्वचिदपिसदेवा सुरनरे
निवर्त्तन्तेनित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः
सपश्यन्नीश त्वामितरसुर साधारणमभूत्
स्मरःस्मर्त्तव्यात्मा नहिवशिषुपथ्यःपरिभवः१५
फिरेना साधे बिन अरथ नर देवा असुरसे
सदा वाणों सेही सब जगत जीता मदन ने।
तुम्हें जाना ईशा सब सुर समाना मदन ने।
हुवाभस्मीकामाःभलनहिजितेन्द्री[9]लघुगिनन १५

१ देवता २ राक्षस ३ गिनाकाल ४ निशान ५ दोष ६ निडर करना ७ मतलब ८ कामदेव ९ इन्द्रियों को जीतने वाला १० छोटा।

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसिननुवामैव विभुता ॥१६॥

किया धर्त्री शंशै जवतव पगा ठोकर लगी
दुखी सारे तारे ऊपर भुजतेरे जब फिरे।
करै स्वर्गी शंका जब रगड़ खावै तव जटा
विभो तेरा टेढा नृत[1]जगत रक्षा[2]हितकरो॥१६॥

वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघु दृष्टः शिरसिते
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः॥१७॥

---

१ लीला २ वास्ते।

रहे फैला सारे उपर जस तारागण सजे
दिखै तेरे शिमैं यक्कबुंद समाना जल महा।
करी टापू तुल्यम् समुद बन घेरा जगतको
इसीसे अंदाजें धृतमहिम[1] तेरा शुभतनुः[2]॥१७॥

रथःक्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथांगे चन्द्राकौं रथचरणपाणिः शरइति।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुरतृणमाडम्बर विधि-
र्विधेयैःक्रीडन्त्योनखलुपरतन्त्राःप्रभुधियः॥१८॥

रथः भूमी सार्थी[3] जगधृत[4] सुमेरू धन हुवे
रवी चंदा चाका हरिहि शुभ बाणा बनगये।
चहौ क्यों ये सारे तुछ त्रिपुर को मारन हिते
न होवे आधीना बुधवड़ेन[5] लीला करन में॥१८॥

---

१ महादेवजी का नाम २ शरीर ३ रथ हांकने वाला, ४ ब्रह्मा ५ बड़े आदमी की बुद्धि।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्र कमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणांरक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९।

हरीबैठे पूजन् सहस[1] कमलों से तव चरन्
घटा एका उन्में तबहि निज नेत्रं बलिधरी ।
इसी भक्ती से ही सुदरशन जाकी[2] बनगया
सदा रक्षा जासे त्रिपुरहर[3] होती जगत की ॥१९

कृतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धांबध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ॥२०॥

---

१ हजार, २ नेत्र कमल का, शिवजी का नाम ।

जवैं सोवे यज्ञम् करम फल दाता तुम जगो
तुम्हें आराधे बिन यग पुरुष हीने फल कहां।
जवैं देखें लोगा तुमहि फलदाता करम का
भरोसा वेदों में यग फल मिलन् का दृढकरैं ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शरणदसदस्या सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलदानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुःश्रद्धाविधुरमभिचाराय हिमखाः ॥२१॥

चतुर्दक्षः[1] यज्ञे[2] अवर यजमाना जगपती[3]
ऋषी आहूतादि सब सुर सभा में शरणदा[4]
हुवा यज्ञा नाशा तुमन अनुरागे[5] फलदता
विनाश्रद्धाकर्ता यग उलट देवे फल दृढम्[6] ॥२१॥

---

१ पूजा, २ यज्ञ करने में, ३ ब्रह्मा, ४ शिवजी का नाम
५ प्रसन्न हुवे, ६ निश्चय

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्रा कृतममुं
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः २२

गया नाथा ब्रह्मा मदनवश[1] पीछे निजसुता[2]
वनी देखी हिर्नी तब हिरन भेशा निजधरा ।
छुटा नाहीं डसैं यदपि धनुधारी नभै[3] गया
तुम्हारीमृगव्याधा[4] अवतक न छोड़े जगधृता २२॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमन्हाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्द्धघटना
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

---

१ कामदेव के वशी भूत, २ कन्या, ३ आकाश,
४ मृग शरीर में भी पीड़ा ।

स्वशोभा आशास उमे[1] धनुष धारा तृण समं
जला देखा कामा पुरमंथन[2] नेत्रं निजहिसे
उमा जाना लंपट् यदि अरध अंगी तव हुई
सभी नारीजाती अलपबुध[3] होती वरदता ॥२३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचा सहचरा-
श्चिता भस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथाऽपि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि ॥२४॥
मसानों में खेलो तुम अवर भूता तव सखाँ[4]
चिता भस्मी लेपन् नर. शिरनमाला गलसजे।
दिखै तेरा भेषा सब अशुभकारी वरदता
यदी सेवें तुम्को तुम उनहि का मंगल करो॥२४

---

१ पारबती, २ शिवजी का नाम, ३ कम, ४ मित्र।

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमभिधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यंतस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्

लगाया आत्मामें मनचितहि श्वासावश किया
भरे प्रेमी जलसे नयन जिन रोमांच सहिता ।
सुधा सागर न्हाके तुमहि जब देखैं मुदित[2] हो
[1]ऐसे जो योगेश्वर मुदित[3] कर तत्व[4] तुमहि हो ।२५।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह हि यत्त्वं न भवसि २६॥

---

१ बहुत प्रसन्न चित्त, २ प्रसन्न, ३ प्रसन्न करने वाले, ४ सार ।

रवी चंदा वायू अगन जल सारे तुमहि हो
तुम्ही आकाशाहो धरणि तुम आत्मा तुमहि हो
कहै वाणी नाना तदपि बुध धारे तुमहि में
नजानैं वो तत्वा तुम बिन रहा हो जगत में ॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथोत्रीनपिसुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिं ।
तुरीयंतेधामध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तंव्यस्तंत्वांशरणदगृणात्योमितिपदम् ॥२७

त्रिवेदा[1] त्रीवृत्ती[2] त्रिसुर[3] सहधारा त्रिभुवने
विकारों[4] को तज्के अउम स्वर तीनों सिधभये।
तुरीया[6] में पौंचे[7] ध्वनि ग्रहण करके शरणदा[8]
सरूपं निरूपम् तव विनय ओमां पद करै॥२७॥

---

१ तीनों वेद–ऋक्, यजु, साम. २ तीन वृत्ति–उदात्त, अनुदात्त, स्वरित. तीन देवत्ता–ब्रह्मा, विष्णु. महेश, ४ खोटापन. ५ ओम् शब्द के तीन हरुफ़ अ, उ, म. ६ चोथी अवस्था. ७ पहुंच गये ८ शिवजी का नाम।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां
स्तथाभीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकंप्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायाऽस्मैधाम्नेप्रणिहितनमस्योस्मिभवते२८

क्रूर[1]ः शर्वो[1]ः रुद्रा[1]ः महत[1] पशुस्वामी[1] भवत[1]था
इशाना[1] भीमा[1]भी तवहि अठनामा यह गिना
इन्ही नामों में ही प्रसनाहित वेदा स्तुति करैं
स्वरूपा प्यारेको ममाशिर नवाया तुमहिको२८

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्शिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो ।
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः२९॥

---

१ शिवजी का नाम ।

निकट् दूरीवर्ती नमत सब भक्ता तुमहि को
स्थुलं सूक्षंरूपम् मदन अरि[1] विन्ती तवकरूं।
नमस्कारा तुम्को तरुण वृध रूपं त्रिनयना[1]
प्रणामा शर्वा को अवर सबरूपा तुमहिको २६॥
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमोनमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमोनमः।
जनसुखकृते सत्वोत्पत्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्येशिवायनमोनमः॥३०॥

हरिणी छंद।

विनती तुमसे जगत्तोत्पत्ते रुपाय रजोभवैः[2][1]
तमगुण धेर लोका नाशे नमामि हरेतुमः।
सतगुण वढे विश्वानंदा सुखाय नमोनमः
अति बडपदे निर्आकारा शिवाय रूपं नमः३०॥

---

१ शिवजी का नाम, २ रजोगुण।

मालिनी छंद ।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

निरबल चित मेरा दुःखधारी कहां है
कुतेतवनित रिद्धी सीमलांघे गुणाया ।
चकित मम इसीसे भक्तिनेही प्रबोधा
वरद चरण तेरे फूलवाणी पुजाया ॥ ३१ ॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्व्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥

---

१ कहां, २ मेरा, ३ सिखाया ।

समुद् बन दवाता स्याहि होवे पहाड़ा
कलम तरुन शाखा पत्र भूमी समाना ।
लिखत दिवस राती बैठ करके भवानी
तदपि तव गुणों का ईशपारा मिलैना ॥ ३२

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकारः ॥३३॥

असुर सुर मुनि भी पूजते चन्द्र माथे
गुण सहित महिम्नः निःस्वरूपं महेशम्
सब गुण कथ करके फूलदंता बनाया
बड़ नर मन हर्ते स्तोत्र छंदा इसी के ॥३३।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तःपुमान् यः ।

स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यः सदात्मा
प्रचुरतरधनायुः पुत्र वान्कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

नितनित निरदोषा स्तोत्र इशा जपेजो
मनुष परमभक्ती शुद्ध चित्ता सहीता।
वह नर शिवलोके रुद्र तुल्यो[1] बनैगा
पुतर धन बढैंगे[2] कीर्ति आयूँ[3] समेता ॥४३॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं होमयज्ञादिकाःक्रियाः।
महिम्नःस्तवपाठस्यकलांनार्हन्तिषोडशीम् ३५॥

अनुष्टुप छंद।

होमदाना तपोमंत्रा सभी कामा करै फला।
महिम्नःस्तोत्रदेउन्सेसोलहगुनाअधिकफला ३५

---

१ समान, २ बड़ाई, ३ उम्र।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरास्तुतिः ।
अघोरान्नापरोमन्त्रोनास्तितत्त्वंगुरोः परम् ॥३६॥
शिवसमो नहिंदेवा नामहिम्नः समोस्तुती ।
ना अघोरा समो मंत्रा तत्त्वंनाहिगुरुसमो॥३६॥

मालिनी छंद ।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः॥३७॥
नृप गनधरवों का फूल दन्ता[1]हि नामा
शिरधर शुभचंदा देव देवाहि दासा ।
शिवहि कुपित करकें भ्रष्ट हूवा महिम्से
इस शुभ महिमा का स्तोत्रकारी वही है॥३७॥

---

१ पुष्पदन्ताचार्य्य,

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्य प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३८ ॥

सुर मुनि सब पूजें स्वर्ग मुक्ताहि कारन्
इक चित नर करके जोड़ हस्ता पठैतो ।
करत विनती किन्नर् जाय ईशा समीपा[1]
यह सुफलहि[2] स्तोत्रा फूलदंता बनाया ॥३८॥

वसन्ततिलका छंद ।

श्रीपुष्पदन्त मुखपङ्कज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ३९ ॥

---

१ पास, २ शुभ फल का देनेवाला.

याही निकास मुख से निज फूलदन्ता
प्यारा महेशहि हरे अघस्तोत्र येही।
कण्ठाग्र जो मनुष्पाठ करे इसेही
होके प्रसन्न शिव वापर देय मुक्ती ॥ ३९ ॥

अनुष्टुप छंद।

समाप्तः तदिदं स्तोत्रं सर्वमीश्वरवर्णनम्।
अनुपमं मनोहारिपुण्यं गन्धर्वभाषितम्॥४०॥
पुण्यदाता मनोहारी जामें गाथा महेश की
पुष्पदन्ता कहा हुवा स्तोत्र समाप्त ये हुवा ॥४०॥

ओम् वन्दे देव उमा पतिं सुर गुरुं वन्दे जगत कारणम् वन्दे पन्नग भूषणम मृगधरं वन्दे पशूनां पतीम। वन्दे सूर्य शशाङ्क वन्हि नयनम वन्दे मुकुंद प्रियम वन्दे भक्त जना श्रयंच वरदं वन्दे शिवं शंकरम ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ गोविन्दाष्टकम लिख्यते ।

सत्यंज्ञानमनंतंनित्यमनाकाशं परमाकाशम्
गोष्ठप्रांगणरिंगणलोलमनायासंपरमायासं ।
मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारम्
क्ष्मामानाथमनाथंप्रणमतगोविन्दंपरमानन्दम्
मृत्स्नामत्सीहेतियशोदाताडनशैषवसंत्रासम्
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोका-
लिम् । लोकत्रयपुरमूलस्तंभंलोकालोकमना-
लोकम्लोकेशंपरमेशंप्रणमतगोविन्दंपरमानदं२
त्रैविष्टपरिपुविरघ्नंक्षितिभारघ्नंभवरोघ्नम्
कैवल्यंनवनीताहारमनाहारंभुवनाहारम्
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तीविशेषा भाषमनाभाषम
शैवंकेवलशान्तंप्रणमतगोविन्दंपरमानन्दम ३॥

गोपालंप्रभुलीला विग्रह गोपालं कुलगोपालं
गोपीखेलनगोवरधनधृतलीलालालितगोपालं।
गोभिर्निगदितगोविन्दस्फुटनामानंबहुनामानं
गोधीगोचरदूरंप्रणमतगोविन्दपरमानन्दम॥४॥
गोपीमंडलगोष्ठीभेदमभेदावस्थम भेदाभम
शश्वद्गोखुरनिर्द्धूतोधृतधूलीधूसरसौभाग्यम।
श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिंत्यचिंतितसद्भावम
चिंतामणिमणिमानंप्रणमतगोविन्दंपरमानंदं५
स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढम्
व्यादितसन्तीरथदिग्वस्त्रायस्त्रंताउपकर्षन्तम
निरद्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धंवुद्धेरन्तस्थम्
सत्तामात्रशरीरं प्रणमतगोविन्दपरमनदं॥६॥
कांतंकारणकारणमादिमनादिंकालघनाभाषम्
कालिंदीगतकालियशिरसीनृत्यंतंमुहुनृत्यंतम्।

कालंकालकलातीतंकलिताशेषंकलिदोषघ्नम्
काळत्रयगतिहेतुंप्रणमतगोविन्दंपरमानदं ॥७॥
वृन्दावनभुविवुन्दारकगणवुन्दाराधितवंद्येहम्
कुंदाभामलमंदस्मेरसुधानंदंसुहृदानंदम् ।
वंद्याशेषमहामुनिमानस वंद्यानंदपदद्वंद्वम्
वंद्याशषगुणाधिं प्रणमतगोविन्दंपरमानदं॥८॥
गोविन्दाष्टकमेतद्धीते गोविंदार्पितचेतायो
गोविंदाच्युतमाधवविष्णोगोकुलनायक
कृष्णेती । गोविंदाघ्रूसरोजद्ध्यानसुधाजल-
धौतसमस्ताघो गोविंदपरमानंदामृतमंतस्थं-
ससमभ्येती ॥ ९ ॥
यदक्षर पद भ्रष्टं मात्रा हीनञ्च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीदः परमेश्वरः ॥

इति समाप्तम् ।